-: प्रथम अध्याय :-

पंजाब – परिचय एवं इतिहास

प्रथम अध्याय

नंददास - व्यक्तित्व एवं कृतित्व ---

अष्टछाप के कवियों में नंददासजी का नाम महत्वपूर्ण है । ब्रजभाषा के साहित्यिक गौरव को नंददासजी ने स्थायी रूप प्रदान किया । प्रेम और भक्ति में मग्न कवियों ने अपने लौकिक जीवन को तुच्छ माना । इसका उच्चारण करना भी इन्होंने अनावश्यक समझा है । भगवान की भक्ति में तल्लीन होकर इन्होंने अपने काव्य की रचना की है । उनके व्यक्तित्व के बारेमें सूचना देनेवाली घटनाओं का उल्लेख उनके काव्य में बहुत कम मिलता है । वे अपने संबंध में मूक रहकर भगवान की भक्ति करते रहते थे । यही कारण है कि अंत:साक्ष्य के आधार पर मध्ययुगीन कवियों के जीवन के बारे में कुछ पता नहीं चलता । आधुनिक काल में यह समस्या नहीं है क्योंकि आधुनिक युग के साहित्यकार अपने व्यक्तित्व के संबंध में स्वयं लिखते हैं । प्राचीन काल में व्यक्तित्व को इतना महत्व नहीं दिया जाता था । नंददासजी के जीवन वृत्त के बारेमें भी यही बात है । अंत:साक्ष्य तथा बहि:साक्ष्य के आधार पर नंददासजी के जीवन के बारेमें बताने का प्रयत्न अवश्य किया जा सकता है ।

अंत:साक्ष्य --

कविवर नंददास के ग्रन्थों में उनकी जीवनी के संबंध में जानकारी देनेवाले अधिक उल्लेख नहीं मिलते । केवल दो - चार बातों का पता कुछ पंक्तियों से लगता है, वह इस प्रकार है ----

नंददास की `रासपंचाध्यायी`, `रसमंजरी` तथा `दशमस्कंध` नामक रचनाओं में एक - एक छंद इस बात का परिचय देता है कि उनका कोई रसिक मित्र था, जिसके कहने से उन्होंने ये रचनायें की थीं ---

`परम रसिक इक मित्र मोहि, जिन आज्ञा दीनी।
तातें मैं यह कथा जथामति भाषा कीनी।`[१]

`एक मीत हमसों अस गुन्यो, मैं नाइका भेद नहिं सुन्यों।
अरन जो भेद नाइक के गुने, तेहू मैं नीके नहिं सुने।`[२]

`दशमस्कंध` की रचना भी उन्होंने अपने को कृष्ण - लीला का परिचय करा देने के लिए की थी। नंददास के मित्र कौन थे, इस बात का पूरा भेद अभी तक नहीं खुला है।

`परम विचित्र मित्र इक रहै। कृष्ण चरित सुन्यों सो चहे।`

इन अवतरणों के दुवारा नंददास के लौकिक जीवन चरित संबंधी कोई सूचना नहीं मिलती। परंतु इसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि `रासपंचाध्यायी`, `रसमंजरी` और `दशमस्कंध` की रचना नंददास ने अपने मित्रों के आग्रह पर की थी। ये मित्र नंददास से कम विद्वान और संस्कृत के ज्ञाता थे। कुछ लोगों का विचार है कि यह मित्र विठ्ठलनाथ की एक शिष्या गंगाबाई थी। वार्तासाहित्य में नंददास की एक स्त्री भक्त रूपमंजरी का उल्लेख किया है। `नंददासजी के ग्रंथों के नाम देखने से जान पडता है कि उन्हें मंजरी नाम बहुत प्रिय है - जैसे रूपमंजरी, रसमंजरी, मानमंजरी, अनेकार्थ मंजरी। जबतक और कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती, तब तक `रूपमंजरी` को ही नंददास का रसिक मित्र मानना समीचीन है।`[3] लेकिन यह भी असंभव नहीं कि इन ग्रंथों की प्रेरणा देनेवाला व्यक्ति कोई दूसरा भी हो सकता है।

नंददास ने अपने पदों में अपने दीक्षा गुरु के बारेमें भी कहा है। उनके

दीक्षा गुरु श्री विठ्ठलनाथ थे । नंददास ने कई पदों में उनके प्रति भक्ति प्रकट की है । साथ ही उनके वंश के बारे में भी लिखा है । इन पदों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नंददासजी श्री वल्लभाचार्य, उनके पुत्र श्री विठ्ठलनाथ तथा पौत्र गिरिधरजी के प्रति पूर्ण भक्ति रखते थे और हमेशा उनकी सेवा में रहते थे । नंददास के पदों से उनके गुरु के बारेमें निम्नलिखित जानकारी मिलती है --

> ' प्रात:समय श्री वल्लभ सुत को पुण्य पवित्र विमल जस गाऊँ ।।
> रहौं सदा चरनन के आगे महाप्रसाद सो जूठन पाऊँ ।। ' [4]
>
> तथा
>
> ' श्री वल्लभ - सुत के चरण भजौं
> - - - - - - - -
> नंददास प्रभु प्रगट भये दोऊ श्री विठ्ठल गिरिधरन भजौं । ' [5]

इस प्रकार इन अवतरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि विठ्ठलनाथजी की भी नंददास पर कृपा थी । ये अपना अधिकांश समय उनके पास रहकर ही बिताया करते थे । वल्लभसुत तथा विठ्ठलनाथ उनके सांप्रदायिक गुरु थे ।

बाह्यसाक्ष्य --

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अंत:साक्ष्य के आधार पर नंददास के व्यक्तित्व संबंध में विशेष जानकारी नहीं मिलती । इसी कारण उनके जीवन संबंधी जानने के लिए हमें बाह्यसाक्ष्य का भी आधार लेना पडेगा । भक्तमाल के प्रणेता नाभादास ने अपने ' भक्तमाल ' में नंददास के संबंध में निम्नलिखित छप्पय लिखा है ---

> " लीला रस रीति ग्रंथ रचना में नागर ।
> सरस उक्ति रस जुक्ति भक्ति रस गान उजागर ।।
> प्रचुर पद्य लौं सुजस रामपुर ग्राम निवासी ।
> सकल सुकुल संवलित भक्त-पद रेनु उपासी ।।

श्री चंद्रहास-अग्रज सुह्रध परम प्रेम पद में पगे ।
श्री नंददास आनंद निधि रसिक सु प्रभुहित रंग मंगे । ६

ऊपर लिखित छप्पय के आधार पर निम्न लिखित जानकारी प्राप्त होती है ---

१) नंददास रामपुर ग्राम के रहनेवाले थे ।
२) वे `सुकुल` याने उच्च कुल में उत्पन्न ब्राह्मण थे ।
३) वे चंद्रहास के बडे भाई अथवा चंद्रहास उनके बडे भाई थे ।
४) वे कृष्ण भक्त थे तथा काव्यरचना में निपुण थे ।

उन्होंने कृष्ण-लीला संबंधी पदों तथा रस-रीति विषयक ग्रंथों की रचना की थी ।

`दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता` के अनुसार ---

१) नंददास तुलसीदास के छोटे भाई थे । वे सनाढय ब्राह्मण जाति के थे ।
२) वे बडे रसिक थे । नंददासजी के बारेमें एक कथा बतायी जाती हैं । सिंहनद नामक गाँव में एक साहूकार क्षत्रिय रहते थे । उनकी पत्नी बहुत सुंदर थी । नंददासजी उसे देखकर मोहित हो गये और बार-बार उसके घर भिक्षा माँगने जाने लगे । जब तक उस क्षत्राणी के दर्शन नहीं होते, तब तक वे वहाँ बैठे रहते । जब यह चर्चा सभी ओर फैल गयी तो उस स्त्री के पति एवं ससुर ने उस गाँव को छोडकर गोकुल जा बसने का विचार किया । नंददास ने यमुना तक उनका पीछा किया लेकिन वे मल्लाह के साथ नदी की दूसरी ओर चले गये और नंददास इस पार ही बैठे रह गये । गोस्वामी विठ्ठलनाथ के दर्शन के लिए क्षत्रिय परिवार जब उनके यहाँ पहुँचा तो विठ्ठलनाथ ने पहला प्रश्न यह किया कि उस ब्राह्मण को तुम उस पार क्यों छोड आये हो ? उन्होंने स्वयं नंददासजी को बुलाने के लिए कहा । विठ्ठलनाथजी के दर्शन मात्र से नंददास सब कुछ भूल गये और वे उनके भक्त हो गये ।

३) गोस्वामी विट्ठलनाथजी नंददास को श्री के द्वार पर ले गये, वहाँ उन्होंने गोवर्धनजी के दर्शन किये । नंददासजी को कृष्ण की बाल - लीलाओं के लिए तभी से प्रेरणा मिली ।

४) तुलसीदासजी ने जब यह सुना कि नंददास विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये हैं तो उन्होंने एक पत्र नंददासजी को लिखा । उन्होंने लिखा कि हमारे पति श्री.रामचंद्रजी हैं । तुमने अपने पतिव्रता धर्म को छोडकर परपुरुष की आराधना क्यों की ? इस पर नंददासजी ने उत्तर दिया कि राम तो एकपत्नी व्रत हैं, वे अनेक पत्नियों को कैसे सँभाल सकेंगे ? वे तो एक पत्नी को ही सँभाल नहीं पाये, सीता को रावण हर ले गया । कृष्ण अनेक अबलाओं के स्वामी हैं । यह उत्तर सुनकर तुलसीदासजी समझ गये कि नंददास का मन वहाँ लग गया है और वे बुलाने पर भी अयोध्या या काशी में नहीं आयेंगे ।

एक बार नंददास श्रीनाथजी के दर्शन के लिए गये तो तुलसीदास भी उनके पीछे - पीछे गये । नंददास ने गोवर्धनदासजी के यहाँ मस्तक झुकाया, परंतु तुलसी ने ऐसा नहीं किया । नंददास ने तुलसी के मन की बात जानी और श्रीनाथ को कृष्ण का रूप धारण करने के लिए कहा, तब तुलसी ने साष्टांग नमस्कार की ।

इसप्रकार बाह्यसाक्ष्य और अंत:साक्ष्य से संबंधित जानकारी के आधार पर नंददासजी के जन्म, जाति-कुल, मृत्यु आदि विषयक निम्नलिखित सूचनायें मिलती हैं । —

जन्मतिथि ---

नंददास की जन्मतिथि के संबंध में आलोचकों में बहुत मतभेद मिलते हैं ।

(१) 'शिवसिंह सेंगर ने 'शिवसिंहसरोज' में नंददास का जन्मकाल सं.१५८५ माना है ।[१७]

(२) डॉ.श्यामसुंदर दास ने भी कवि का जन्मकाल १५९० के लगभग माना है ।

(३) डॉ.धीरेन्द्र वर्मा और ब्रजेश्वर वर्मा सं.१५९० स्वीकार करते हैं।

(४) द्वारिकाप्रसाद पारीख ने भी सं.१५९० की कल्पना की है।

इन सभी के आधार पर हम यह अनुमान निकालते हैं कि सं.१५९० यह तिथि नंददास की जन्मतिथि है।

जन्मस्थान --

नंददासजी के जन्मस्थान के संबंध में भी विद्वानों में मतभेद है। कवि ने अपने जन्म स्थान के विषय में कुछ भी नहीं लिखा है।

१) भक्तमाल में नंददास को रामपुर का निवासी बताया गया है।

२) 'दीनदयालु गुप्त का विचार है कि नंददास गोकुल मथुरा के पूर्व रामपुर ग्राम के निवासी थे।'

३) पाटन से प्राप्त हस्तलिखित 'अष्टछाप वार्ता' में उनका ग्राम 'रामपुर' ही लिखा है।

४) 'सूकर क्षेत्र महात्म्य' में कवि कृष्णदास लिखते हैं ---

'छोत वराह समीप शुचि ग्राम रामपुर वास।
सोई रामपुर श्यामपुर कर्यो पिता नंददास ॥'

इसका मतलब वराह क्षेत्र के समीप रामपुर ग्राम में कवि का निवास स्थान था, जिसे उन्होंने बदलकर बाद में श्यामपुर कर दिया था।

इसके आधार पर हम यह निश्चित करते हैं कि रामपुर ही नंददास का जन्म-ग्राम है।

जाति - कुल --

भक्तमाल से लेकर सोरों सामग्री तक नंददास को 'सुकुल' याने उच्च कुल में उत्पन्न माना है। 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' में नंददास को सनाढ्य ब्राह्मण कहा गया है। दीनदयालु गुप्त ने भी 'भक्तमाल' के आधार पर उन्हें शुक्ल आस्पदवाले सनाढ्य ब्राह्मण कुल का माना है।

गुरु और परिवार --

नंददास और तुलसीदास चचेरे भाई थे । `तुलसीदास और नंददास दोनों अपने बाल्पन में नृसिंह पंडित से पढा करते थे । जिनकी पाठशाला सोरों में चक्रतीर्थ के निकट थी । इसके पश्चात् शेष सनातन गुरु से उन्होंने शिक्षा ली और संभवत: नंददास ने आरंभ में शिक्षा-गुरु के प्रभाव से तुलसी की तरह रामभक्ति अपनाई थी ।`[९]

अंत:साक्ष्य से यही स्पष्ट होता है कि वल्लभसुत तथा विठ्ठलनाथ उनके गुरु थे ।

इसके आधार पर हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि नृसिंह पंडित उनके शिक्षा गुरु और वल्लभसुत तथा विठ्ठलनाथ उनके दीक्षा गुरु थे ।

नंददास के पिता का नाम जीवाराम था । विठ्ठलनाथजी ने सांप्रदायिक ज्ञान और सत्संग के लिए उन्हें सूर को सौंपा । सूरदास के साथ वे पारसोली में छ: महिने रहे । सूरदास ने उनके लिए `साहित्य-लहरी` की रचना की और उन्हें साहित्यिक शिक्षा दी, परंतु सूरदासजी ने यह अनुभव किया कि नंददास का हृदय पूर्णत: वासनारहित नहीं हुआ हैं । उन्होंने कहा कि जब तक तुम गृहस्थी सुख का अनुभव न कर लोगे, तब तक तुम्हें लीला रास का अनुभव होना असंभव हैं । इस पर नंददास अपने गाँव रामपुर वापस आये और कमला नामक कन्या से उनका विवाह हुआ । कालांतर में उनके कृष्णादास नामक पुत्र का जन्म हुआ ।

इस प्रकार नंददास के पिता का नाम जीवाराम था । उनकी पत्नी का नाम कमला तथा पुत्र का नाम कृष्णादास था ।

मृत्यु ---

`नंददास की मृत्युतिथि के विषय में वार्तासाहित्य को छोडकर और कोई सबल प्रमाण नहीं हैं ।`[१०] कहा जाता है कि नंददास ने गंगा नदी पर अकबर और बीरबल के सामने देह त्याग किया था । एक - बार अकबर बादशाह ने

मथुरा - गोकुल के पास गंगा पर डेरा डाला था । उस समय बीरबल भी उनके साथ थे । एक दिन अकबर बादशाह के सामने तानसेन ने नंददास रचित पद गाया -- 'देखो री देखो नागर नट निरतत कालिंदी तट, नंददास गावे तहाँ निपट निकट ' अकबर बादशाह ने उन्हें बीरबल के द्वारा बुलावा भेजा और इस पद का अर्थ स्पष्ट करने को कहा । नंददास ने उतर दिया कि उसकी लौंडी रुपमंजरी को इसका अर्थ पूछिए । बादशाह ने जब रुपमंजरी को इसका अर्थ पूछा तब वह पृथ्वी पर गिर पडी और उसने प्राण त्याग दिये । उधर नंददास के भी प्राण निकल गये ।

नंददासजी की मृत्यु के समय बीरबल तथा गोस्वामी विठ्ठलनाथजी दोनों जीवित होने की बात वार्ता साहित्य से सिद्ध होती है । विठ्ठलनाथजी का गोलोकवास सं. १६४२ में और बीरबल का देहावसान सं. १६४३ में होना सर्वमान्य है ।

इसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नंददास का गोलोकवास भी संवत् १६४२ के कुछ पूर्व होना चाहिए ।

व्यक्तित्व ---

किसी भी कवि का व्यक्तित्व उसके आसपास के वातावरण से निर्मित होता है । साथ साथ युग की विचारधाराओं तथा परिस्थितियों का योग इसमें महत्वपूर्ण रहता है । काव्य अगर समाज का प्रतिबिंब है तो कवि के भावों या विचारों का सजीव चित्र भी होता है । किसी भी कवि की कविता उसकी आत्मा की अनुभूति होती है ।

स्वच्छंदप्रिय नंददास --

कवि नंददासजी स्वभाव से स्वच्छंदप्रिय थे । पिता,पत्नी,पुत्र आदि किसी के बंधन में वे बँधे नहीं रहे । इन सभी को छोडकर वे काशी की यात्रा पर निकल पडे । अपने भाई तुलसीदास की बात पर भी उन्होंने ध्यान नहीं दिया ।

रसिक नंददास --

वे रसिक जीव थे । प्रारंभिक जीवन में यह रसिकता सांसारिक इच्छाओं और विषय - वासनाओं में दिखाई देता था । सिंहनद की क्षत्राणी के रूप पर मुग्ध होकर प्रतिदिन उसके द्वार पर दर्शन के लिए जाना और उसके पीछे - पीछे गोकुल की ओर चलना इससे उनकी रसिकता ही दिखाई देती है । उनके स्वभाव की इस रसिकता उनकी कृष्ण-भक्ति में स्पष्ट परिचय मिलता है ।

भावुक नंददास --

नंददास प्रकृति से अत्यंत भावुक थे । जब वे क्षत्रिय नारी के प्रति मुग्ध हो गये थे तब उस मोह में सुध-बुध खो बैठे थे । बाद में जब वे भगवान की भक्ति करने लगे तब उसी में मग्न हो गये । रूपसौन्दर्य का आकर्षण कृष्ण - लीलाओं के गुणगान में परिवर्तित हो गया । नारी - सौन्दर्य की रसिकता भगवत् - प्रेम की गंभीर निष्ठा में बदल गयी । `रसमंजरी`, `विरहमंजरी` तथा `रासपंचाध्यायी` आदि ग्रंथों में उनकी यह रसिक प्रवृत्ति ही दिखाई देती है ।

तार्किक नंददास --

`कवि प्रतिभा की तार्किकता का सर्वोच्च रूप हमें उनकी गोपियों की तार्किकता में मिलता है ।`[11] उनकी यह तार्किकता `भँवरगीत` में सुंदरता से अभिव्यक्त हो चुकी है । तुलसीदास ने नंददास से रामभक्ति करने के बारे में लिखा था । फिर भी नंददास ने उसकी कोई परवाह नहीं की । तुलसी के प्रत्येक तर्क का उन्होंने सुंदर तर्क से खंडन कर दिया है । तुलसीदास के बार-बार समझाने पर भी वे उनके आदेश का उल्लंघन कर रणछोडजी के दर्शन के लिए चले गये । इससे उनका हठी स्वभाव भी व्यक्त होता है । तुलसीदास जब राम की भक्ति करने के लिए कहते हैं, तब नंददासजी ने जो उत्तर दिया है , वह सचमुच ही सुंदर है ।

प्रतिभासंपन्न नंददास --

नंददास प्रतिभासंपन्न कवि थे । संस्कृत काव्यशास्त्र का उन्होंने काफी अध्ययन किया था । अपने किसी मित्र को संस्कृत का ज्ञान तथा शिक्षा देने के लिए उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की । विद्वान होने के साथ - साथ वे अध्ययनशील भी थे । वे एक महान पंडित थे । वे ब्रजभाषा के धनी और संस्कृत भाषा के विद्वान थे । नंददास के संबंध में प्रसिद्ध उक्ति ` और कवि गाढ़िया नंददास जड़िया ` से उनका भाषा लालित्य ही स्पष्ट हो जाता है । भँवरगीत की गोपियों के तर्कों में जो ज्ञान झलकता है, वह उनकी प्रतिभा का ही परिणाम है । गोस्वामी तुलसीदास के ` रामचरितमानस ` के ढंग पर संस्कृत के ` श्रीमद्भागवत ` नामक प्रसिद्ध ग्रंथ को भाषा में लिखने का निश्चय उन्होंने एक बार किया था । यह बात जब पंडितों ने सुनी तो वे एकत्र होकर गोस्वामी विट्ठलनाथजी के पास गये उन सबने बिनती की कि यदि नंददास ऐसा करेंगे तो हमारी आजीविका जाती रहेगी । परिणामस्वरूप गोस्वामी के आदेश से नंददास ने ` श्रीमद्भागवत ` का अनुवाद नहीं किया । उन्होंने रासलीला तक ` दशमस्कंध ` रखकर शेष ग्रंथ यमुना में प्रवाहित कर दिया । नंददास के काव्य में उनकी मौलिकता के दर्शन होते हैं । अनेक नवीन छंदों का प्रयोग भी उन्होंने अत्यंत सहजता से किया है । कवि की प्रतिभा गोपियों की तार्किकता में स्पष्ट रूप में दिखाई देती है । ` अनेकार्थ मंजरी ` में विभिन्न शब्दों के अर्थ देते हुए नंददास ने राधिका-मान की कथा प्रस्तुत की है, वह भी कवि प्रतिभा को ही स्पष्ट करती है ।

कृतित्व --

नंददास की साहित्य-कृतियों का परिचय-नंददासजी की रचनाओं के संबंध में विद्वानों के विभिन्न विचार हैं । इनके ग्रंथों की संख्या ७ से ३० तक मानी जाती है । शिवसिंह सेंगर ने १६, मिश्रबंधुओं ने २२ तथा आचार्य शुक्ल ने २३ रचनाएँ मानी हैं । काशी नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्टों के अनुसार यह संख्या १७ है । अनेक विद्वानों ने उनकी निम्नलिखित १४ कृतियाँ प्रामाणिक मानी हैं ---

१) रासपंचाध्यायी
२) रूपमंजरी
३) रसमंजरी
४) अनेकार्थमंजरी
५) विरहमंजरी
६) मानमंजरी
७) भाषा दशमस्कंध
८) श्यामसगाई
९) सुदामाचरित्र
१०) गोवर्धन लीला
११) सिद्धांतपंचाध्यायी
१२) रुक्मिणीमंगल
१३) भँवरगीत
१४) पदावली ।

१) रासपंचाध्यायी ---

यह नंददासजी की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसकी रचना 'भागवत' के दशमस्कंध के पाँच अध्यायों के आधार पर पाँच अध्यायों में हुई है। 'रासपंचाध्यायी' का वर्ण्य विषय कृष्ण - गोपिकाओं की रासलीला है। इसमें प्रारंभ में शुकदेव का वंदन किया गया है। इसके बाद वृंदावन, कृष्ण शोभा शरद रजनी और मुरलीवादन आदि का वर्णन करते हुए नंददास ने गोपियों की विरहावस्था पर प्रकाश डाला है। इसमें कृष्ण-गोपियों का रास अत्यंत आकर्षक बन गया है। 'रासपंचाध्यायी' की शैली, मधुरता जयदेव के 'गीत - गोविंद' से मिलती है। इस प्राचीनतम प्रति को सब विद्वान नंददास की प्रामाणिक रचना मानते हैं। सभी प्रतियों में नंददास के नाम की छाप है। भाव, भाषा, शैली आदि की दृष्टि से भी यह नंददास की अन्य कृतियों से साम्य रखती है।

२)　　रूपमंजरी --

नंददास की सांप्रदायिक पुष्टि - भक्ति का समावेश, भाव, भाषा की अन्य रचनाओं से समानता आदि तथ्य भी इसे नंददासकृत सिद्ध करते हैं। सभी समीक्षक इसे नंददास की प्रामाणिक रचना मानते हैं। यह एक आख्यान काव्य है। सुंदरी रूपमंजरी की जीवन - गाथा द्वारा कवि ने आध्यात्मिक प्रेम की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया है। इसमें शुद्ध गोपी - प्रेम का अत्यंत सरस वर्णन है।

३)　　रसमंजरी --

लगभग सभी इतिहासकारों ने इसे नंददास की रचना माना है। प्राप्त प्रतियों में नंददास के नाम की छाप स्पष्ट है। दोहा चौपाई में लिखा नायक - नायिका भेद का यह एक रीति ग्रंथ है। संस्कृत की भानुदत्त कृत 'रसमंजरी' का आधार लेकर कवि ने इसकी रचना की है। नायिकाओं के भेद करने से पूर्व कवि ने अपने आराध्य के रसमय रूप का स्तवन किया है। कहा जाता है कि अपने मित्र के आग्रह की खातिर उन्होंने रसमंजरी की रचना की थी ---

'एक मीत हमसों अस गुन्यो। मैं नाइका भेद नहिं सुन्यो।
अरु जो भेद नाइक के गुने। ते हू मैं नीके नहिं सुने।'[१२]

४)　　अनेकार्थमंजरी ---

'अनेकार्थमंजरी' पर्यायवाची शब्दों का कोश है। इस ग्रंथ की रचना भी लोगों को संस्कृत की शिक्षा देने के लिए की थी।

'उचरि सकत नहिं संस्कृत, अर्थ ज्ञान असमर्थ
तिन हित नंद सुमति जथा भाषा कियो सुअर्थ।।'[१३]

मित्रों को 'रासपंचाध्यायी' और 'भाषा दशमस्कंध' सुनाने से पूर्व कवि उसे संस्कृत शब्दों का अर्थ ज्ञान करवा देना उचित समझता था। भिन्न - भिन्न विद्वानों ने इस ग्रंथ के नाम भिन्न-भिन्न दिये हैं - जैसे

अनेकार्थ, नामचिंतामणिमाला, अनेकार्थ नाममाला, अनेकार्थमंजरी, अनेकार्थ भाषा आदि ।

५) विरहमंजरी --

नंददासजी की इस रचना को भी विद्वानों ने प्रामाणिक माना है । सभी हस्त प्रतियों में नंददास के नाम की छाप है तथा भाव, भाषा, छंद, शैली आदि की दृष्टि से अन्य ग्रंथों से साम्य है । यह एक विरहकाव्य है, जिसमें विरहिणी गोपियों ने चंद्र के द्वारा कृष्ण के पास संदेश भेजा है । इस ग्रंथ पर कालिदास के `मेघदूत` की स्पष्ट छाप है । इसमें प्रत्यक्ष, पलकांतर, वनांतर और देशांतर आदि चार प्रकार के विरह के भेद बता दिये हैं । विरह वर्णन बारहमासा पद्धति पर किया है ।

६) मानमंजरी --

यह एक कोश ग्रंथ है । संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने में इससे बहुत सहायता ली जा सकती है । इसमें राधिका के मानवर्णन का चित्रण किया गया है । राधा का मान वर्णन, दूती द्वारा मान - मनावन की कथा भी है । इसमें कवि की तीव्र कल्पनाशक्ति का परिचय मिलता है ।

७) भाषा दशमस्कंध --

सभी इतिहासकारों ने इसे नंददास की रचना माना है । यह रचना २८ अध्यायों तक ही मिलती है । इसका आधार `श्रीमद्भागवत` है । इस ग्रंथ में कृष्ण लीलाओं का वर्णन किया है । इसमें वल्लभ संप्रदाय के सिद्धांतों की भी प्रतिष्ठा तथा वृंदावन की महिमा का वर्णन किया गया है । इस ग्रंथ की रचना भी कवि ने एक मित्र की इच्छा पूर्ण करने के लिए की थी ।

८) श्यामसगाई --

यह केवल २८ छंदों की रचना है । राधा - कृष्ण से संबंधित एक छोटी - सी घटना को इसमें चित्रित किया गया है । एक बार राधा कृष्ण के घर पर खेलने आती हैं और यशोदा उसे अपने कृष्ण के लिए उपयुक्त समझकर ब्राह्मणी से उसके यहाँ सगाई का प्रस्ताव भेजती हैं, लेकिन राधा की माँ इन्कार कर देती हैं । बाद में कृष्ण राधा का चित्त हरण कर लेते हैं । राधा की सखियाँ उससे यह कह देती हैं कि घर जाकर तुम यह कह देना कि उसे सर्प ने काटा है । वे कहेंगी कि कृष्ण बडे गारुडी हैं और वे उसे बुला देंगी । बाद में कृष्ण आ जाते हैं, तब कृष्ण के दर्शनमात्र से राधा ठीक हो जाती है । सखियों के आग्रह से कृष्ण के गले में राधा जयमाला पहना देती है । अंत में ब्रजवासियों के आनंद का चित्रण किया गया है । कवि ने राधा के मानसिक भावों का विश्लेषण बडी सुंदरता से किया है ।

९) सुदामाचरित्र --

इस ग्रंथ को `भागवत दशम स्कंध` का एक अंश माना जाता है । इस ग्रंथ के द्वारा कवि ने कृष्ण की भक्त वत्सलता, दयालुता तथा मित्रता का परिचय दिया है । प्रारंभ में सुदामा को दीन होने तथा उसकी विपन्नता का परिचय दिया गया है । उसकी पत्नी का पतिव्रता धर्म तथा कर्तव्यपरायणता को भी सुंदरता से चित्रित किया गया है । कृष्ण की भक्त-वत्सलता आकर्षक बन गई है । यह दोहा चौपाई में लिखित ग्रंथ है ।

१०) गोवर्धनलीला --

गोवर्धनलीला में भी दशमस्कंध के कुछ पदों का समावेश है । इसमें कृष्ण के गोवर्धन धारण की कथा को लिया गया है । इसमें प्रारंभ में गुरु - वंदना की गयी है । इंद्र की कोपवृष्टि से जब ब्रजवासी दुःखी होकर शरण चाहते हैं तो श्रीकृष्ण गोवर्धन को अँगुली पर उठाकर उनकी रक्षा करते हैं ।

नंददास की अन्य कृतियों से इसका साम्य है । इसकारण इस रचना को नंददास की प्रामाणिक रचना माना गया है ।

११) सिद्धांत पंचाध्यायी --

'रास-पंचाध्यायी' के सिद्धांत पक्ष को प्रकट करनेवाली यह रचना है । इसमें वल्लभ संप्रदाय के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है । कवि ने अध्यात्मिक दृष्टिकोण रखते हुए कृष्ण की वेणु, गोपी और रास की व्याख्या की है । 'रासपंचाध्यायी' की तरह 'सिद्धांतपंचाध्यायी' में भी गोपियों के अध्यात्मिक मार्ग की श्रेष्ठता अभिव्यक्त की है ।

१२) रुक्मिणीमंगल --

रुक्मिणीमंगल नंददास का एक छोटा-सा ग्रंथ है । नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें रुक्मिणी के विवाह की कथा है । किस प्रकार वह अपने भाई रुक्म के विरुद्ध होकर शिशुपाल को न वरण कर कृष्ण को वरण करती है, कैसे ब्राह्मण द्वारा कृष्ण तक संदेश भिजवाती है और कैसे कृष्ण उसे हर ले जाते हैं । इन सभी प्रसंगों का चित्रण कवि ने भावपूर्ण ढंग से किया है । रुक्मिणी की विरह दशा, उसके भावों, अनुभावों का चित्रण भी सुंदरता से किया गया है ।

१३) भँवरगीत --

इसमें उद्धव - गोपी संवादों द्वारा ज्ञान पर भक्ति की विजय दिखलायी है । कृष्ण जब गोकुल छोडकर मथुरा चले जाते हैं तो उन्हें गोपियों के अनन्य प्रेम की याद आती है, तब वे उद्धव को ब्रज भेजते हैं और गोपियों का विरह दूर करने के लिए कहते हैं । तब गोपियाँ अपने तर्कों से ज्ञानी उद्धव को निरुत्तर कर देती हैं । सूर की गोपियों की तरह भँवरगीत की गोपियाँ सीधी-सरल नहीं हैं, वे तर्क की पूर्ण पंडिता हैं ।

१४) पदावली --

नंददासकृत कुछ फुटकर पद भी पाये जाते हैं । यह तो सर्वमान्य है कि नंददास उच्च कोटि के गवय्ये और कीर्तनकार थे । उन्होंने विभिन्न विषयों पर पद रचे हैं । यमुना के पद, कृष्ण - जन्म , बधाई तथा विवाहसंबंधी पद इसमें पाये जाते हैं ।

निष्कर्ष ---

नंददास की सभी कृतियों को देखने से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि नंददासजी ने केवल भक्तिभाव से प्रेरित होकर काव्य नहीं लिखा, बल्कि वे एक कलाकार भी थे । अपने संस्कृत ज्ञान का उपयोग उन्होंने कोश ग्रंथों की निर्मिति करने के लिए किया है । सिद्धांत - निरूपण में उनकी प्रतिभा स्पष्टता से दिखाई देती है ।

नंददास के काव्य में भावपक्ष और कलापक्ष का सुंदर समन्वय हो चुका है । लौकिक प्रेम और अध्यात्मिक प्रेम की दृष्टि से यह काव्य काव्य-प्रेमियों को आकर्षित करता है । काव्यसौष्ठव की दृष्टि से सूरदास के बाद नंददासजी का ही नाम आता है । विद्वानों ने नंददास के बारेमें कहा है - ` आन कवि गढ़िया नंददास जड़िया ` नंददासजी को ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि माना जाता है । ` रासपंचाध्यायी ` , ` भँवरगीत ` आदि उनकी रचनाएँ विशेष महत्वपूर्ण बन गयी हैं । ` रासपंचाध्यायी ` में कृष्ण - गोपिकाओं की रासलीला सुंदर बन गयी है । गोपियों के विरह के साथ - साथ प्रकृति का चित्रण भी आकर्षक बन गया है । उनके ` भँवरगीत ` में साहित्य,भक्ति और दर्शन इन तीनों का सुंदर योग दिखाई देता है । ` रूपमंजरी ` , ` विरहमंजरी ` में गोपी - प्रेम सरस बन गया है । ` सिद्धांतपंचाध्यायी ` में सिद्धांतों का निरूपण रोचक बन गया है ।

इसप्रकार नंददास बहुमुखी काव्य प्रतिभा के कलाकार थे ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१) रासपंचाध्यायी
संपा. प्रेमनारायण टंडन
हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ
प्र.सं. १९६० ई.
पृष्ठ क्र. ७ ।

२) रासपंचाध्यायी
संपा. प्रेमनारायण टंडन
हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ
प्र.सं. १९६० ई.
पृष्ठ क्र. ७ ।

३) नंददास और उनका भँवरगीत
ले. डॉ. पूर्णमासी राय
बिहार पब्लिशिंग हाऊस, पटना
प्र.सं. १९६७
पृष्ठ क्र. ३ ।

४) नंददास
उमाशंकर शुक्ल
प्रयाग विश्वविद्यालय
प्र.सं. १९४२
पृष्ठ क्र. ४३१ ।

५) नंददास ग्रंथावली
संपा. ब्रजरत्नदास
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
दूसरा संस्करण - २०१४
पृष्ठ क्र. ५ ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

६) भक्तमाल

भक्ति सुधा स्वाद तिलक, रूपकला

प्र.सं. १६००-१६०८ वि.

पृ.क्र. ९०२ ।

७) शिवसिंह सरोज

शिवसिंह सेंगर

साहित्य सम्मेलन प्रयाग

प्र.सं. २००१ वि.

पृष्ठ क्र. ४०५ ।

८) नंददास और उनका भँवरगीत

ले.डॉ.पूर्णमासी राय

बिहार पब्लिशिंग हाऊस पटना

प्र.सं. १९६७

पृष्ठ क्र. ५ ।

९) अष्टछाप और नंददास

डॉ.कृष्णदेव झारी

शारदा प्रकाशन, महारौली, नई दिल्ली,

प्र.सं. १९७६ ।

पृष्ठ क्र. ७४ ।

१०) नंददास

रमेशकुमार खट्टर

सामायिक प्रकाशन दिल्ली ६

प्र.सं. १९६७

पृष्ठ क्र. ५० ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

११) नंददास
रमेशकुमार खट्टर
सामायिक प्रकाशन दिल्ली ६
प्र.सं. १९६७
पृष्ठ क्र. ५० ।

१२) नंददास ग्रंथावली
डॉ. ब्रजरत्नदास
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
दूसरा सं. २०१४
पृष्ठ क्र. १२६ ।

१३) नंददास ग्रंथावली
डॉ. ब्रजरत्नदास
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
दूसरा संस्करण २०१४
पृष्ठ क्र. ४१ ।